ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 26, अंक 241 नवम्बर 2023

संपादक – डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 26 अंक 241
नवम्बर 2023

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ. बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	कबीर काव्य में रहस्य और दर्शन	डॉ. उपदीप कौर	04
3.	दलितों व आदिवासियों की वर्तमान में उभरती नई बाधाएँ एवं चुनौतिया	डॉ. सुरेन्द्र / अनिता	07
4.	आदिवासी समाज और संस्कृति : एक विवेचन	डॉ. दीपक कुमार	10
5.	Strategies Being Practiced for Promotion of Inclusion in Schools of Central District of Delhi - An Exploratory Study	**Dr. Sandip Kumar** **Dr. Shyam Sundar**	12
6.	D.H. Lawrence's The Rainbow : A Novel of Man - Woman Relationship with Modern Flavor	**Krishana Kumar Sharma** **Dr. Kanwar Pal Singh**	18
7.	Roadmap of Paris Agreement with Special Reference to India "People of conscience need to break their ties with corporations financing the injustice of climate change"	**Kamni Sharma** **Research Scholar**	23

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम – आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.– 63040357829
बैंक – भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा– फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

भारतीय संविधान निर्माण में बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को महाकारुणिक तथागत गौतम बुद्ध के आष्टांगिक मार्ग ने मार्गदर्शक का काम किया। तथागत द्वारा निर्दिष्ट आठ मार्ग हैं–सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कमन्ति, सम्यक आजीविका, सम्यक समाधि।

सम्यक दृष्टि का अर्थ है–अविद्या का नाश/ अर्थात् मानव कर्मकाण्ड की क्रिया–कलाप को व्यर्थ समझे, शास्त्रों की पवित्रता की मिथ्या धारणा से मुक्त हो। संविधान के सृजन में बाबासाहेब ने सम्यक दृष्टि का पूर्ण रूप से पालन किया है जो जन–जन के लिए हितकारी हुआ। सम्यक संकल्प का अर्थ है–हमारी आशाएं–हमारी आकांक्षाए उच्च स्तर की हो, निम्न स्तर की नहीं हो। संकल्प योग्य हो, अयोग्य नहीं हो। सम्यक वाणी का व्यवहार न किसी को भयभीत रखता है और न किसी को पक्षपाती। इसका इस बात से कोई संबंध नहीं होना चाहिए कि कोई बड़ा आदमी उसके बारे में क्या सोचने लगेगा अथवा सम्यकवाणी के व्यवहार से उसकी क्या हानि हो सकती है। संविधान की रचना में बाबासाहेब ने सम्यकवाणी का पूर्ण पालन किया है।

सम्यक कमन्ति का अर्थ है–दूसरे की भावनाओं, दूसरे के दुःख–सुख का ध्यान रखना। सम्यक कमन्ति इस बात के लिये प्रेरित करती है कि हमारा प्रत्येक कार्य ऐसा हो जो जीवन के मुख्य नियमों से अधिकाधिक ताल–मेल रखता हो। बाबा साहेब ने सम्यक कमन्ति के आधार पर ही सभी वर्गों, सभी स्तर, सभी लिंग, धर्म का पूरा–पूरा ध्यान रखते हुए संविधान की रचना की। सम्यक व्यायाम का अर्थ है–अविद्या को नष्ट करना संविधान की धारा 45 सभी बच्चे को 14 वर्ष की आयु तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का विधान अविधा को नष्ट करने हेतु है।

सम्यक स्मृति का अर्थ है–प्रत्येक तथ्य और कथ्य पर सावधानीपूर्वक ध्यान देना। सम्यक स्मृति सतत् जागरुकता का ही दूसरा नाम है। भारत जैसे विविधता वाले विशाल देश में जहाँ किसी का किसी से तालमेल नहीं, एक–दूसरे के प्रति साम्य नहीं ऐसे वातावरण में बिना पूर्ण जागरुकता के देश का बेहतर संविधान किसी से बन ही नहीं सकता था। संविधान की एक–एक धारा में बाबासाहेब का जागरुक व्यक्तित्व झलकता है। यह अद्भूत है, अति सराहनीय है।

सम्यक समाधि भावात्मक वस्तु है। यह मन को कुशल कर्मों का एकाग्रता के साथ चिंतन करने का अभ्यास डालता है। सम्यक समाधि मन को हमेशा भलाई की ओर प्रेरित करती है। सम्यक समाधि मन को वह अपेक्षित शक्ति देती है जिससे मानव हमेशा कल्याणरत् रह सके। सम्यक आजीविका का अर्थ है– कुशल कर्म को करके अपनी जीविका का निर्वाह करना। कोई व्यक्ति कुशल कर्म कब करेगा जब उसे कुशल कर्म करने का अवसर मिलेगा, वातावरण मिलेगा। संविधान की धारा 41, 42, 43 जीविका के बेहतर वातावरण से संबंधित है। इस प्रकार तथागत के आष्टांगिक मार्ग पर चलकर बाबासाहेब डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश का श्रेष्ठ संविधान रचा।

राष्ट्रपति से लेकर सिपाही तक इस देश के प्रशासन में कोई भी व्यक्ति अपने देश के संविधान को निजी जीवन में किसी भी धर्मग्रंथ या देवी–देवताओं से भी अधिक महत्व देता है, ऐसा दृश्य आज तक सामने नहीं आया है। प्रत्येक पाठशाला में ईश्वर और सभ्यता संवर्धन की रक्षा की प्रार्थना तो अवश्य होती है, लेकिन संविधान में समाहित बंधुता, समता, न्याय से संबंधित प्रार्थना का अभाव है। तब बंधुभाव, बुद्धि प्रामाण्य, न्याय, शांति, समता जतानेवाली नई पीढ़ी कैसे उभर आयेगी।

विश्व के सबसे सुंदर, सबसे श्रेष्ठ और सबसे ऊँचे संविधान के प्रति अपने प्राण न्यौछावर करने के बजाय इस देश का नागरिक जाति, धर्म और ईश्वर के प्रति अपनी जान न्यौछावर करने के लिए तैयार है। यह दृश्य देश की प्रभुसत्ता पर एक कलंक ही नहीं बल्कि भविष्य में देश को एक बहुत बड़ा धोखा भी हो सकता है।

सदियों से गुलाम, अत्याचार में रहे इस देश को एक धर्म–निरपेक्ष, समता, स्वातंत्र्य, न्याय, बंधुता, शांति का विशाल और चिरंतन मूल्य देनेवाला संविधान देकर बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर ने यह चमत्कार दुनिया को कर दिखाया। जयभीम! जय संविधान।

– डॉ. तारा परमार

कबीर काव्य में रहस्य और दर्शन

– डॉ. उपदीप कौर

भक्ति मानव प्रकृति का नैसर्गिक लक्षण हैं। भारतीय धरा की पहचान भी आध्यात्मिक पुरोधा के रूप में रही हैं। किसी भी देश, समाज अथवा क्षेत्र में व्यक्ति की समाज एवं वातावरण के प्रति अजस्र प्रतिक्रिया होती रहती हैं। यह प्रक्रिया दो प्रकार से होती हैं – बाह्य और आंतरिक। ये विशेष व्यक्ति अपने दार्शनिक चिन्तन का युक्तिपूर्वक प्रतिपादन करते हैं।[1] यह दर्शन युक्तिपूर्वक होने के कारण चिन्तनशील व्यक्तियों के ऊपर अपना प्रभाव छोड़ता हैं [2] जो बाद में उपदेशों, शिक्षा, धर्मगुरुओं द्वारा समाज में प्रचारित होती हैं जो किसी भी समाज में रीति, परम्परा व मान्यताओं में तब्दील हो जाती हैं । समयानुसार दया चिन्तन परिपक्व रूप धारण कर आध्यात्मिक शक्ति में तब्दील हो जाता हैं। यह दार्शनिक चिन्तन, धार्मिक नैतिक एवं सौन्दर्य विश्वास में रूपान्तरित हो जाता हैं।[3] भारतवर्ष में भक्ति–शक्ति प्रमुख रूप से तीन वर्गो में भास्वरित हुई हैं– वैदिक भारत, बौद्ध भारत और मुस्लिम भारत।[4] वैदिक भारत में अध्यात्म का आकार निराकर भी रहा हैं व साकार भी तथा परम तत्त्व पर भी आधारित रहा हैं। सतचित् आनन्दमय ब्रह्मा साकार हैं और निराकार भी, सगुण भी हैं व निर्गुण भी, सावधि हैं च निरवधि भी, बाह्य और आंतरिक भी है।[5] वेद पुराण उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि और न जाने उन कितने भाष्य उसके विवेचन में लिखे गए। नेति नेति कहकर ऋषियों–मनीषियों की वाणी जिसका गुणानुवादन करके थकी नहीं।[6] मूकास्वादनवत् कहकर जिस आनन्दानुभूति का वर्णन कोई कर नहीं पाया। वैदिक धर्मग्रन्थों का इतना विशाल और समृद्ध भण्डार हैं कि भारतीय सांस्कृतिक जीवन की प्रत्येक गतिविधि पर उसका प्रभाव परिलक्षित होता हैं।[7] भारतभूमि में सभी धर्म एवं सम्प्रदायों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से वैदिक चिन्तन से सम्बन्ध रहा हैं।[8]

मूल शब्द – दर्शन, वेद, पुराण, उपनिषद्, द्वैत–भावना, आध्यात्मिकता, शाक्य ब्राह्मण, कबीर की रहस्यात्मकता, अक्खड़ता, संसार की शुतुर्मगी–प्रवृति ।

'दर्शन' शब्द की व्युत्पति 'दृश' धातु से मानी जाती है जिसका अर्थ है– देखना, निरीक्षण करना, इसके साथ करणवाचक प्रत्यय 'ल्युट' का योग होने के कारण इसका अर्थ 'जिसके द्वारा देखा जाए' भी किया जाता है।[9] किन्तु शब्दकोष के अनुसार 'दर्शन' सामान्यतः चाक्षुश या प्रत्यक्ष साक्षात्कार का ही सूचक माना जाता है।

यों भी कबीर को वैष्णवों से प्रेम है और शाक्तों से घृणा :

साकत मरै सन्त जन जीवै ।
भरि भरि राम रसायन पीवै ।।
तथा
स्नो की छतरी भली ।
ना साकत ब्राह्मण मति मिलै । बैस्नो मिलै चंडाल ।।[10]

तो यह विदित होता है कि उक्त मुसलमानी धर्म में परिणति प्राप्त नाथपंथी जुलाहा जोगीकुल में जन्म लेकर कबीरदास 'वैष्णव' हुए। 'वैष्णव' होने की बात किवदंती से ही नहीं, कबीर के प्रमाण से सिद्ध भी है। कबीर ने बताया है :

काासी में हम प्रकट भये हैं रामानन्द चेताये[11]

गुरुग्रन्थ साहिब में आए कबीर के एक पद में लिखा है :

मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ।
ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ।।
तनना बुनना सब तजिओ कबीर।
हरि का नाम लिख लियो सरीर ।।
जब लग भरों नली का बेह।
तब लग टूटे राम सनेह ।।
ठाढ़ी रौवे कबीर की माई ।
पूरणहारा त्रिभुवन राई ।।[12]

कबीर पहले कोरी हिन्दु थे, फिर मुसलमान हुए तो इनका कुटुम्ब जुलाहा कहलाया, किंतु इस मत को मान्यता नहीं मिली। कबीर के संबंध में उन्हीं के समकालीन सन्त रैदास ने कहा है

जाकैं ईद बकरीद नित गउरे बध करें मानिये सेष सहीद पीरों।[13]

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि कबीर का जन्म शुद्ध मुसलमान कुल में हुआ था। वह जन्म से मुसलमान थे। कबीर ऐसे दारिद्रय और दुखपूर्ण परिस्थितियों में रहते हुए भी राम – भक्ति में लीन थे। माँ तो इनसे दुखी थी ही इनकी स्त्री भी प्रसन्न प्रतीत नहीं होती, क्योंकि एक पद में कबीर ने माँ के वचनों को यों उपस्थित किया है :

मेरी बहुरिया का धनिया नाउ ।
ले रख्यौ रमजनिया नाउ ।।
इन मुण्डियन मेरा घर धुँधरावा ।
बिटवहि राम रमौआ लावा ।।[14]

कबीर का रचनाकार सृजन के स्तर पर भी और जीवन के स्तर पर भी हर जगह भागीदार की हैसियत से विद्यमान रहता है। उसकी संचेतना उसे शुतुर्मुगी – प्रवृति से दूर रखती है – हर गलती के प्रति वह तीव्र प्रतिक्रिया देती है–उसके लिए हर कदम एक नया प्रारंभ और झेलने और परिस्थितियों को उनके सच्चे परिदृश्यों में देखने की एक नयी चुनौती है। कबीर की सारी लड़ाई अपनी ही विरासती और संस्कारी प्रवृतियों और परम्परा के प्रति मोहग्रस्त दुर्बलताओं के खिलाफ है । कवि अपने समस्त पिछड़ेपन से आक्रान्त है तो दूसरी ओर अपने ऊपर लदी हुई शताब्दियों की सांस्कृतिक उपलब्धि और परम्पराओं से। कबीर के लिए गलत के प्रति स्वीकृति अनुचित है। स्थिति चाहे जितनी ही खतरनाक और त्रासद क्यों न हो – झुकना, अपने को और भी खत्म कर देना है। उसका सारा विद्रोह और क्रोध जड़ताओं के प्रति है ।

अरे इन दोउ राह न पाई, हिंदु की हिंदुआई देखी, तुरकन की तुरकाई[15]

कबीरदास ने यह अक्खड़ता योगियों से विरासत में पाई थी। संसार में भटकते हुए जीवों को देखकर करूणा के अश्रु से वे कातर नहीं हो आते थे बल्कि और भी कठोर होकर उसे फटकार लगाते थे । वे प्रह्लाद की भाँति सर्वजगत् के पाप को अपने ऊपर ले लेने की इच्छा से ही विचलित नहीं हो पड़ते थे बल्कि और भी कठोर, और, और भी शुष्क होकर सुरत और विरत का उपदेश देते थे। संसार में भरमने वालों पर दया कैसी, मुक्ति के मार्ग में अग्रसर होने वालों को आराम कहाँ, करम की रेख पर मेख न मार सका तो संत कैसा?

कबीर तो स्वभाव से फक्कड़ थे। अच्छा हो या बुरा, खरा हो या खोटा, जिससे एक बार चिपट गए उसमें जिंदगी भर चिपटे हो, यह सिद्धांत उन्हें मान्य नहीं था। वे सत्य के जिज्ञासु थे और कोई मोह–ममता उन्हें अपने मार्ग से विचलित नहीं कर सकती थी। वे अपना घर जलाकर हाथ में मुराड़ा लेकर निकल पड़े थे और उसी को साथी बनाने को तैयार थे जो उनके हाथों अपना भी घर जलवा सके,

हम घर जारा आपना, लिया मुराड़ा हाथ।
अब घर जारों तासु का, जो चलै हमारे साथ ।।[16]

वे सिर से पैर तक मस्त–मौला थे। मस्त – जो पुराने कृत्यों का हिसाब नहीं रखता, वर्तमान कर्मों को सर्वस्व नहीं समझता और भविष्य सब कुछ झाड़–फटकार निकल जाता है। जो दुनियादार किए – कराए का लेखा–जोखा दुरूस्त रखता है, वह मस्त नहीं हो सकता। जो इश्क का मतवाला है, वह दुनिया के माप–जोख से अपनी सफलता का हिसाब नहीं करता। कबीर – जैसे फक्कड़ को दुनिया की होशियारी से क्या वास्ता? ये प्रेम के मतवाले थे अगर अपने को उन दीवानों में नहीं गिनते थे जो माषूक के लिए सिर पर कफन बाँधे फिरते हैं, जो बेकरारी की तड़पन में इश्क का चरम फल पाने का भान करते हैं, क्योंकि बेकरारी उस वियोग में होती है जिसमें प्रिय दूर हो–उसे पाना कठिन हो। पर जहाँ प्यारे से एक क्षण के लिए भी बिछोह नहीं, वहाँ तड़पन कैसी? जो गगरी भरी है उसमें

छलकन कहाँ ? जहाँ द्वैत – भावना ही मिट गई हो उस अजब मस्ती में बेचैनी कहाँ ?

हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या।
रहें आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या।
जो बिछुडे हैं पियारे से, भटकते दर–बदर फिरते।
हमारा यार है हम में, हमन को इंतजारी क्या ।
खलक सब नाम अपने को, बहुत कर सिर पटकता है।
हमन गुरू नाम साँचा है, हमन दुनिया से यारी क्या।
न पल बिछुडे पिया हमसे, न हम बिछुडे पियारे से।
उन्हीं से नेह लागी है, हमन को बेकरारी क्या।
कबीरा इश्क का माता, दुई को दूर कर दिल से।
जो चलना राह नाजुक है, हमन सिर बोझ भारी क्या।।[17]

निष्कर्ष :

आसमान अर्थात् गगन – चंद्र की परम ज्योति । जो वस्तु केवल शारीरिक व्यायाम और मानसिक शमदृदमादि का साध्य है वह चरम सत्य नहीं हो सकती। योगी लोग एक प्रकार की जड – समाधि की बात स्वीकार करते हैं जिसमें योगी लक्ष्य–भ्रष्ट होकर जड़ शरीर – विकार को सिद्धि समझने लगता है। परम–पुरुष योग का परम प्रतिपाद्य है, आत्मा – गम्य है, वह आँख–कान का विषय नहीं है। केवल शारीरिक और मानसिक कवायद से दिखनेवाली ज्योति जड़ चित्त की कल्पनामात्र है। वह भी बाह्य है। कबीर ने कहा, और आगे चलो। केवल क्रिया बाह्य है, ज्ञान चाहिए । बिना ज्ञान के योग व्यर्थ है। केवल पिंड में–तत्रापि गगनदृगुफा में या शून्यचक्र में यदि घटघटवासी मिलता है, तो कहीं बिसमिल्ला ही गलत हो गया है। अगर कहते हो कि वह केवल भीतर ही है तो बाहर का यह सारा विश्व ब्रह्मांड मारे लज्जा के पानी–पानी हो जाता है। क्या गगन–गुफा के बाहर सबकुछ भगवान के बाहर है, क्या उसके कण–कण में प्रभु व्याप्त नहीं है, क्या वह व्यर्थ ही जगत में पड़ा हुआ है? पर अगर इसी की ओर ताकें, यही मान लें कि बाहर की सारी दुनिया में ही वह परम–पुरुष रम रहा है और भीतर उससे शून्य है तो यह बात झूठ है। कबीरदास ने कितनी ही बार 'कमल–कुआ में ब्रह्मरस' का पान किया था, गगन से झरते हुए अमृतरस का आस्वादन किया था। यह झूठ है कि यह परम पुरूष भीतर नहीं है। जो कहता है कि वह भीतर ही है बाहर नहीं, वह सारे बाह्य जगत् को व्यर्थ ही लज्जित करता है और जो कहता है कि वह भीतर है ही नहीं, वह झूठा है।

– डॉ. उपदीप कौर
पत्नी श्री मनप्रीत सिंह गिल
फार्म हाऊस
गाँव–पोस्ट वैदवाला,
जिला सिरसा (हरियाणा) –125060
मोबा. 8685887741

संदर्भ :

1. सिन्हा, ए. के., हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, (सं.) साधुराम शारदा, पृ. 244
2. सिन्हा, ए. के., हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, (सं.) साधुराम शारदा, पृ. 246
3. सिन्हा, ए.के., हरियाणा एक सांस्कृतिक अध्ययन, (सं.) साधुराम शारदा, पृ. 249
4. संपला, बी.आर., भारत माँ के सौतेले बेटे, पृ. 13
5. श्री अद्वैतस्वरूप विवेकदयाल प्रकाश (जीवनचरित) श्री छोटे महाराज जी, पृ. 1
6. श्री अद्वैतस्वरूप विवेकदयाल प्रकाश (जीवनचरित) श्री छोटे महाराज जी, पृ. 66
7. वाचस्पति गैरोला, भारतीय दर्शन, पृ0 9
8. सम्पा. बलदेव वंशी 'पूरा कबीर' पृ. 11
9. सम्पा. बलदेव वंशी 'पूरा कबीर' पृ. 14
10. सम्पा. बलदेव वंशी 'पूरा कबीर' पृ. 56
11. सम्पा. बलदेव वंशी 'पूरा कबीर' पृ. 36
12. सम्पा. बलदेव वंशी 'पूरा कबीर' पृ. 86
13. कबीर वाणी पृ. 34
14. कबीर : शब्दा पृ. 50
15 सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर साहित्य पृ. 5.8
16. कबीर : 'शब्दा प. 16–17
17. कबीर वाणी पृ. 133, पद 87

दलितों व आदिवासियों की वर्तमान में उभरती नई बाधाएँ एवं चुनौतियाँ

– डॉ. सुरेन्द्र
– अनिता

सारांश –

भारतीय संविधान देश के प्रत्येक नागरिक को समानता, स्वतंत्रता, धार्मिक स्वतंत्रता व शोषण के विरुद्ध अधिकार प्रदान करता है। दलित व आदिवासी समुदाय के लोग भारत के वे नागरिक हैं जो भारत की वास्तविक स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। यदि भारत की वास्तविक दशा के दर्शन करने हो तो दलित व आदिवासी नागरिकों की स्थिति को जानना अति आवश्यक हो जाता है। वर्तमान में इन समुदायों की स्थिति को पहचानने के लिए ऐतिहासिक परिदृश्य की भी आवश्यकता पड़ती है जो इस तथ्य का आभास करवाता है कि सदियों से इन समाजों का ताना–बाना कैसा था। सदियों से इन समुदायों की स्थिति हाशिए पर ही रखी गई तथा प्रत्येक तरह के अधिकारों से इनको वंचित रखा जाता रहा। दलितों व आदिवासियों के लिए भारतीय संविधान में अनेक प्रावधान किए गए हैं तथा इसके साथ–साथ अनेक कानूनों व नियमों को भी लागू किया गया हैं जिससे इनके हितों की रक्षा की जा सके। व्यापक स्तर पर किए गए इन उपायों के उपरांत भी इनकी स्थिति में खास परिवर्तन नहीं हो पाया है। देश में आज दिन–प्रतिदिन अनेक घटनाएं सामने आ रही हैं जो दलितों व आदिवासियों के उत्पीड़न का प्रमाण प्रस्तुत करती है।

मूल शब्द – दलित आदिवासी, दलित आदिवासी अधिकार, अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों के संवैधानिक प्रावधान।

प्रस्तावना – भारतीय समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित समाज रहा है जिसमें दलितों व आदिवासियों को समाज के सबसे निचले स्तर पर रखा गया तथा समाज में इनकी स्थिति हाशिए पर बनी रही। इस समाज के लोगों को व्यवस्था के नाम पर समाज की मुख्यधारा में शामिल नहीं किया गया। विडम्बना तो यह रही कि प्राचीनकाल से ही दलितों व आदिवासियों की वास्तविक स्थिति को नजर अंदाज करते हुए ऐसी साहित्यिक रचनाओं को भी हतोत्साहित किया गया जो दलितों व आदिवासियों के हितों की आवाज उठाती हो। दलितों को अछूत का दर्जा प्रदान किया गया था व दलितों की परछाई के स्पर्शमात्र से सवर्ण स्वयं को अपवित्र मान लेते थे। ज्योतिबा फुले ने अछूत जैसे अपमानजनक शब्द से निजात दिला समाज में सदियों से इस वर्ग को दबाए व कुचले जाने के कारण इन्हें ''दलित'' की संज्ञा प्रदान की। आधुनिक भारतीय समाज में दलितों व आदिवासियों के हितों की रक्षा के लिए डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने जोरदार आवाज उठाई व अपने आंदोलनों, भाषणों, रचनाओं, लेखन तथा अनेक माध्यमों के द्वारा इनके हितों की रक्षा के लिए वैश्विक स्तर पर पैरवी करते हुए इसमें सफलता भी प्राप्त की जिसका स्पष्ट प्रमाण भारतीय संविधान में इन वर्गों के लिए किए गए प्रावधानों के रूप में देखा जा सकता है।

दलितों व आदिवासियों के प्रमुख संवैधानिक प्रावधान – भारतीय संविधान में दलितों व आदिवासियों को अनुच्छेद 341 व अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के रूप में शामिल कर सूचीबद्ध किया गया है। भारतीय संविधान मौलिक अधिकारों की व्यवस्था करता है तथा नागरिकों को अनेक अधिकार प्रदान करता है। संविधान में दिए गए ये अधिकार सभी नागरिकों को प्राप्त हैं। मौलिक अधिकारों के संविधान में शामिल किए जाने के कारण भारतीय समाज की सदियों से चली आ रही सामाजिक भेदभाव की सभी कुप्रथाओं व कुरीतियों पर रोक लगा दी गई जो मानव की समानता व स्वतंत्रता को बाधित करती थी तथा जो मानवी शोषण को बढ़ावा देती थी। संविधान के

अनुच्छेद 17 के द्वारा अस्पृश्यता को समाप्त कर दिया गया व छुआछूत जैसी कुप्रथा के लिए कानून निर्माण कर दण्डनीय अपराध के प्रावधान किए जा चुके है। अनुच्छेद 16(4) अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के लिए सेवाओं में आरक्षण की व्यवस्था करता है तथा इसके साथ–साथ सेवाओं में बैकलॉग की नियुक्तियों की भी व्यवस्था की गई है। संविधान के भाग 10 का अनुच्छेद 244 अनुसूचित क्षेत्रों व जनजाति क्षेत्रों के प्रशासन की व्यवस्था करता है जिसके द्वारा पांचवी व छठी अनूसची को संविधान में उपबंधित किया गया है। संविधान के भाग 16 में अनुच्छेद 330 के द्वारा लोकसभा व अनुच्छेद 332 विधानसभाओं में स्थानों के आरक्षण की व्यवस्था की गई है। अनुच्छेद 243(घ) तथा अनुच्छेद 243(न) में पंचायतों व नगरपालिकाओं में अनुसूचित जातियों व अनुसूचित जनजातियों के स्थानों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई है। संविधान में अनुसूचित जाति व जनजातियों के राष्ट्रीय आयोग की व्यवस्था की गई है जो इनके हितों की रक्षा व अन्य कार्य करता है।

दलितों व आदिवासियों की बाधाएं व चुनौतियां – दलितों व आदिवासियों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए तथा इनके हितों की रक्षा के लिए अनेक संवैधानिक प्रावधान किए गए हैं तथा लगातार संविधान में संशोधन किए जा रहे हैं। इन वर्गों के हितों की रक्षा के लिए दिन–प्रतिदिन न्यायालयों के द्वारा न्यायिक व्याख्याएं की जा रही है परन्तु इतने प्रयास करने के बाद भी इनकी स्थिति में व्यापक स्तर पर सुधार नजर नहीं आ रहा हैं। दलित व आदिवासियों को धरातल पर वो अधिकार प्राप्त नहीं हो पा रहे जिनकी व्यवस्था उनके लिए की गई हैं। देश के अनेक हिस्सों में दलितों व आदिवासियों पर अत्याचारों की अमानवीय घटनाएं दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। अनेक ऐसी अमानवीय घटनाएं समाचार–पत्रों व मीडिया के द्वारा कवर की जाती हैं तथा अनेक घटनाओं पर शोध पत्र प्रकाशित किए जा रहे हैं जो इस प्रकार के अत्याचारों पर प्रत्यक्ष प्रकाश डालते हैं। अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम के तहत पीड़ित पक्ष की सुनवाई में देरी तथा अपराधी के प्रति नरम रूख अक्सर दर्शाता है कि इस प्रकार के कानूनों को अधिक कड़ाई से लागू किए जाने की आवश्यकता है। आदिवासियों ने सदियों से अपना आवास जंगल को बनाए रखा है तथा प्रकृति के उपासक व प्राकृतिक सम्पदा को संजोए रखने वाले समाज के रूप में अपनी अहम भूमिका निभाई है। पैसा, कानून जो आदिवासियों को उनकी जल, जंगल, जमीन पर बने रहने के लिए बनाया गया था को प्रभावी रूप से लागू नहीं किय जा रहा है तथा विकास के नाम पर उनको जंगलों से निकाला जा रहा है। ग्राम पंचायतों में अनेक ऐसे प्रावधान किए जा रहे हैं जिससे दलितों व आदिवासियों के प्रतिनिधित्व को प्रभावित किया जा सके जिसका जीता जागता उदाहरण है, ग्राम पंचायतों में चुनाव लड़ने के लिए शिक्षा की अनिवार्यता को शामिल किया जाना। तमाम सरकारी आंकड़े बताते हैं कि दलित व आदिवासी समाज पूर्ण रूप से शिक्षित नहीं हो सका है ऐसे प्रावधानों के द्वारा सीधे इनके हितों पर प्रहार किया जा रहा है। लोकसभा व विधानसभाओं में दलितों व आदिवासियों के लिए आरक्षण के प्रावधान किए गए हैं ताकि इन वर्गों के उचित प्रतिनिधित्व के द्वारा इनके हितों की रक्षा हो सके, परन्तु राजनैतिक व्यवस्था के नियमों के आधार पर राजनैतिक पार्टियां केवल सीटें प्राप्त करने के लिए अनुसूचित जाति व जनजातियों के लोगों को चुनावी मैदान में उतारती हैं तथा चुनावों में जीत हासिल कर लेने के उपरांत केवल पार्टी हित को ध्यान में रखकर कार्य करती है ना कि दलित व आदिवासी हितों को। सरकारी पदों पर रोजगार के लिए इन वर्गों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई है तथा बैकलॉग की सीटों की व्यवस्था भी की गई है परन्तु इस व्यवस्था को अभी भी उचित रूप से

लागू नहीं किया जा सका है। निजीकरण के बढ़ते चलन ने रोजगार को लेकर दलितों व आदिवासियों के लिए नई चुनौतियां प्रस्तुत कर दी हैं व इस नई व्यवस्था ने इन समुदायों पर रोजगार के साथ–साथ शिक्षा, स्वास्थ्य व सामाजिक न्याय के मार्ग में भी संकट खड़ा कर दिया है।

निष्कर्ष – दलितों व आदिवासियों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए भारतीय संविधान में व्यापक स्तर पर प्रावधान किए गए हैं। इन समुदायों के लिए अनेक ऐसे कानूनों का निर्माण किया गया है जो इनके हितों की रक्षा करे व सामाजिक न्याय में आने वाली बाधाओं व चुनौतियों को दूर करें परन्तु वास्तव में इन लक्ष्यों को अभी प्राप्त नहीं किया जा सका है। वर्तमान में तेजी से बदलती व्यवस्था व निरन्तर होने वाले वैश्विक स्तर के परिवर्तनों ने दलितों और आदिवासियों के अस्तित्व को प्रभावित करते हुए इनके समक्ष भारी संकट खड़ा कर दिया है। इस कारण इन वर्गों के अधिकारों व हितों पर अधिक ध्यान दिए जाने व इस हेतु बनाए गए नियमों व कानूनों को वास्तविक रूप से लागू किए जाने की आवश्यकता है। दलितों व आदिवासियों के राजनैतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए कार्यपालिका, न्यायपालिका व राजनैतिक पार्टियों के द्वारा विशेष ध्यान दिए जाने के साथ–साथ इन समुदायों को स्वयं अपने हितों की रक्षा के लिए लामबंदी की व्यापक स्तर पर आवश्यकता है। दलितों व आदिवासियों को अपने हितों की पहचान करते हुए स्वयं भी इस ओर तेजी से एकजुटता के साथ मुखर होना चाहिए ताकि बाधाओं व चुनौतियों से निपटा जा सके।

– डॉ. सुरेन्द्र, प्रो. कॉलोनी, आदमपुर
हिसार, हरियाणा–125052
मोबा. 89012 77555

– अनिता रानी, सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान
आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल
हरियाणा–136027
मोबा. 74978 96702

सन्दर्भ सूची –

1. The Constitution of India https://legislative.gov.in/constitution-of-india.
2. Ndtv https://youtu.be/JqrxtynjtmY
3. कुमार सुशील, ग्राउंड रिपोर्टः राजस्थान में गरीब दलितों पर भीषण हमले, अपनी माटी दलित आदिवासी विशेपांक, सितंबर 08, 2015. https://www.apnimaati.com/
4. मंथन, गांव स्वशासन और पंचायती संस्थान, 2016, अनुज्ञा बुक्स दिल्ली.
5. लक्ष्मीकांत एम., भारत की राजव्यवस्था, 2020, McGraw Hill Education (India) Pvt.Ltd.
6. https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/jyotirao-phule
7. https://youtu.be/csLl4Xn9dyU
8. The Hindu News Paper, https://www.thehindu.com/news/national/parliamentary-panel-slams-vacancies-in-reserved-posts/article31003580.ece
9. रॉय अंरूधति, अनुवाद जयहिन्द यादव अनिल, लाल रतन, एक था डॉक्टर एक था संत, 2021, पांचवां संस्करण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
10. Kumar Vinod, Democracy ‘Only for the Haves’ in LocalSelf Governance ,5(1) 99–108 2018 National Law University Delhi SAGE Publications.

आदिवासी समाज और संस्कृति : एक विवेचन

– डॉ. दीपक कुमार

भारत एक विशाल देश है, जिसमें विभिन्न भाषाओं, धर्मों, जातियों व संस्कृतियों के लोग मिलकर रहते हैं। आपसी मेलजोल और सम्बन्धों के इसी ताने–बाने को समाज कहते है। आदिवासियों का अपना एक समाज है। समाज के अभिजात्य वर्ग की क्रूर और कठोर न्याय व्यवस्था ने जिन्हें सदियों से आजीवन वनवास दिया है। अब तो उन्हें वन में भी वास नहीं करने दिया जा रहा है। भारतीय समाज मोटे रूप से तीन भागों में बांटा जाता है ग्रामीण समाज, नगरीय समाज और आदिवासी समाज। ''आदिवासी समाज उपेक्षित एक पृथक समाज है, जिसकी एक निश्चित संस्कृति, भाषा एवं धर्म है। आज के विश्व में आदिवासी उपेक्षित रूप से सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से काफी पिछड़े हैं।''[1] वास्तव में आधुनिक भारत के निर्माण में आदिवासी समाज भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहा है।

आदिवासी समाज युगों से अपने साथ हो रहे शोषण, अन्याय व अत्याचार के खिलाफ आवाज उठा रहा है किन्तु उचित बौद्धिक क्षमता व प्रतिभा के बिना वह साहित्य और समाज का विषय नहीं बन पा रहा था। हाल के कुछ वर्षों में हाशिये पर पड़े इस समाज को साहित्य और सिनेमा में अभिव्यक्ति मिलने लगी है। आज आदिवासियों के लिए नये शब्दों का प्रयोग होने लगा है। रमणिका गुप्ता इस संदर्भ में लिखती हैं कि – ''वर्तमान स्थिति में आदिवासी शब्द का प्रयोग विशिष्ट पर्यावरण में रहने वाले, विशिष्ट भाषा बोलने वाले, विशिष्ट जीवन–पद्धति तथा परम्पराओं में सजे और सदियों से जंगलों – पहाड़ों में जीवन–यापन करते हुए अपने धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को संभालकर रखने वाले मानव समूह का परिचय करा देने के लिए किया जाता है।''[2] अतः एक विशेष पर्यावरण जीवन–शैली से सजे, समान सांस्कृतिक जीवन–यापन करने वाले अक्षर ज्ञान रहित समूह को आदिवासी के नाम से जाना जाता है।

प्रकृति सदा ही आदिवासियों की सहचरी रही है। प्रकृति ने उन्हें दुख भी दिया और सुख भी। उन्हें हंसाया भी और रुलाया भी किंतु आदिवासियों ने कभी प्रकृति के प्रति विद्रोह रूप नहीं अपनाया। प्रकृति के साथ आदिवासियों का प्रेम सदा से प्रगाढ़ रहा है। प्रकृति की छाया में ही उठना–बैठना, खाना–पीना, गाय व बकरी चराना, कंद मूल, जड़ी–बूटी, लकड़ी काठी लेना, पेड़ की छाँव तले सो जाना, बीड़ी पत्ता तोड़ना सब कुछ प्रकृति ही से तो होता है।

प्रकृति का दोहन करना आदिवासियों का संस्कार नहीं है। आदिवासी कवि अनुज लुगून लिखते हैं 'कल एक पहाड़ को ट्रक पर जाते हुए देखा/उससे पहले नदी गई। अब खबर फैल रही है कि/मेरा गाँव भी यहाँ से जाने वाला है।'[3] आज उसी प्रकृति से आदिवासियों को बेदखल कर उनसे उनकी मूलभूत चीजें जल, जंगल और जमीन छीने जा रहे हैं।

आदिवासियों का समाज मातृसत्तात्मक व जनतन्त्रात्मक संगठन है। उनके यहाँ स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में समानता है। मिलकर एक साथ कार्य करना, खाना–पीना, नाचना–गाना व शिकार करना होता है। आदिवासी बाजारों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की भूमिका अधिक रहती है। इस समाज में स्त्रियों के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव, अन्याय, बलात्कार, छेड़छाड़ नहीं होती है। स्वयं को सभ्य कहने वाले लोग ही धन–बल से आदिवासी स्त्रियों के साथ चारित्रिक भ्रष्टाचार करते हैं। उनके यहाँ स्त्री उपेक्षित नहीं सहभागिनी है। संघर्ष के क्षणों में वह पुरुष के साथ खड़ी हो जाती है। आजादी के दिनों में आदिवासी स्त्रियाँ पुरुषों के साथ अंग्रेजों से युद्ध भी करती थी। काम के समय यही स्त्रियाँ अपनी पीठ पर बच्चों को बांधकर पुरुषों के साथ मिलकर काम करती है। आदिवासी संस्कृति के विस्तार में महिलाओं की भूमिका पुरुषों से

अधिक है। इस संदर्भ में रमणिका गुप्ता लिखती हैं कि 'भारत की संस्कृति में महिलाओं की जो स्थिति है, आदिवासी संस्कृति में महिलाओं की स्थिति उससे बहुत भिन्न नहीं है। आम धारणा है कि आदिवासी महिलाएँ अधिकार सम्पन्न तथा बराबर की हकदार हैं, किन्तु ऐसी बात नहीं है।'[4] आदिवासियों में दहेज के लिए बहुओं की जान नहीं ली जाती। वे कन्या भ्रूण हत्या नहीं करते। इसलिए लड़कियों का जन्मोत्सव भी उत्साह के साथ मनाया जाता है। आदिवासी स्त्री पति को अपना जीवन साथी मानती है। भारत में जहाँ उच्च वर्ग 'ऑनर किलिंग' के द्वारा अपनी बहन–बेटियों से जीने का अधिकार छीन रहा है, वहीं आदिवासी समाज में स्त्री को अपना जीवन साथी चुनने का अधिकार है।

आदिवासी हमारे पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन करने का कार्य बड़ी सहजता और लगन से कर रहे हैं। यही कारण है कि उन्हें आज भी प्रकृति पुत्र की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। वे आज भी आधुनिक सभ्यता से दूर अपने वनों–घाटियों, नदी–नालों, पशु–पक्षियों, देवी–देवताओं तथा रूढ़ियों और संस्कारों से जुड़ी हुई, आदिम संस्कृति में जी रहे हैं। स्वभाव से कृतज्ञ आदिवासी प्रकृति के प्रत्येक उपादान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। हरे–भरे वृक्ष देखकर आदिवासियों के चेहरे खुशी से खिल उठते है। आदिवासी हल से धरती का सीना विदीर्ण कर खेती नहीं करते अपितु पेड़ों को काट कर धरती पर गिराकर उसमें आग लगा देते हैं और फिर उस राख में बीज बो देते हैं और इससे जो फसल प्राप्त होती है उसी से ये अपना पेट भरते हैं। आदिवासी शरीर पर बहुत कम कपड़ों का प्रयोग करते है। पुरुष सामान्यतः 'गांडो' नामक वस्त्र कमर में लपेटे हैं औरतें कपड़े का एक टुकड़ा कमर के चारों ओर लपेटे रहती हैं, जिसे स्थानीय भाषा में 'रिकींग' कहते हैं।

आदिवासियों में सामाजिक रूढ़ियाँ बहुत प्रबल हैं। उनमें अग्निपरीक्षा की प्रथा आज भी मौजूद है। किसी व्यक्ति के दोष या निर्दोष की जांच अग्नि परीक्षा के द्वारा ही होती है। देवी–देवताओं में इनका अटूट विश्वास होता है। अपने देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए ये सुअर या मुर्गे की बलि देते हैं। बीमारी में ओझा की मदद ली जाती है। किसी व्यक्ति के मरने पर उसके शव को साफ कपड़े में लपेटकर सजाया जाता है और सामूहिक भोज के बाद शव को धरती में गाड़ दिया जाता है।

वर्तमान में आदिवासी अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी आदिवासी समाज उपेक्षित, अभिशप्त, शोषित, अशिक्षित हैं। सरकारों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, जमीन और जंगल से आदिवासियों को बेदखल किया जा रहा है। आदिवासी आज भी गरीबी, भूख, बेरोजगारी, शोषण, कुपोषण और बीमारी के शिकार हैं। आज आदिवासियों की असली संस्कृति और भाषा को मिटाने की साजिशें की जा रही है। इसीलिए आदिवासी समाज का प्रबुद्ध वर्ग, बुद्धिजीवी वर्ग व साहित्यकार अपने समाज को एकीकृत करके अपनी अस्मिता, अपने नाम और संस्कृति को बचाने का कार्य पूरी जिम्मेवारी से कर रहा है।

युगों से हाशिये पर रहे आदिवासियों को शिक्षित होने पर ही ज्ञात हुआ कि झाँसी की रानी ही नहीं बल्कि उनसे भी अधिक वीर–वीरांगनाएँ आदिवासियों में हुए हैं जिनमें 'सिनगीदई' और 'बिरसा मुण्डा' प्रमुख हैं। बिरसा मुंडा जिन्होंने अंग्रेज सेना को भी मात देकर जन–चेतना का आंदोलन चलाया था। आदिकवि कवि महोदव टोप्पो समाज को संगठित और शिक्षित होने का आह्वान करते हैं। 'सबसे बड़ा खतरा' कविता में कवि कहते हैं 'यही है सबसे बड़ा खतरा कि हम अपनी पहचान खो रहे हैं/खो रहे हैं कि हम अपने स्वाभिमान स्वर/न मिमिया रहे हैं न गरज रहे हैं। इसी कारण ऊँची अट्टालिकाओं में/पंखों के नीचे वे हमारी असमर्थता पर मुस्करा रहे हैं।'[5]

आदिवासी संस्कृति में श्रम को अहमियत दी जाती है। इनके लिए श्रम वही है जो आनंद व उमंग प्रदान करता है। वर्ष भर निरंतर श्रम करके जीवन को हर्ष और उल्लास के साथ मनाना इन्हें खूब आता है। झारखण्ड में

'काम नूनू की चाम नून' की अवधारणा है अर्थात जो श्रम करता है, वही सुंदर है। आदिवासियों में कोई व्यक्ति किसी भी विशिष्ट पद पर आसीन हो परन्तु उसे भी श्रम से छूट पाने का अधिकार नहीं है। यदि कोई अच्छी बाँसुरी बजाता है या ढोल, नगाड़ा, माँदल बजाने में प्रवीण है, तब भी उसे खेत–खलिहान में काम करना ही पड़ेगा ।

निष्कर्षत : हम कह सकते हैं कि आदिवासी समाज और संस्कृति वर्तमान में विशेष महत्व रखते हैं। मनुष्य जाति के भविष्य और सुंदर धरती के लिए आदिवासी जीवन–मूल्यों को तरजीह देनी होगी। साथ ही पाठ्यक्रमों में आदिवासी जीवन और संस्कृति को शामिल करना होगा। आदिवासियों के हुनर, कौशल, प्रकृति प्रेम और रहन–सहन से शेष संस्कृतियों को परिचित कराना होगा तभी सांस्कृतिक आदान–प्रदान होगा। इस संदर्भ में आलोचक चौथी राम यादव लिखते हैं–"सच बात तो यह है कि यदि लोक संस्कृति और लोक कलाएँ आज जीवित हैं, तो उसका मूल श्रेय दलितों और खासतौर पर आदिवासियों को जाता है। उनका जीवन, उनका साहित्य और लोककलाएँ सभी मौलिक हैं, जो किसी अनुवादक की मोहताज नहीं है।[6]

– **डॉ. दीपक कुमार**
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय, भेरियां, कुरुक्षेत्र।
मो.नं. 8708861229

संदर्भ :

1. सच्चिदानन्द रू समाज शास्त्र, पृ. –41
2. रमणिका गुप्ता रू आदिवासी कौन, पृ. 26–27
3. डॉ. श्रवण कुमार मीणा, संपादक : कविता में आदिवासी समाज और संस्कृति, पृ. – 17
4. रमणिका गुप्ता : युद्धरत आम आदमी, पृ. 90
5. रमणिका गुप्ता : आदिवासी स्वर और नई शताब्दी, पृ. 50 – 51
6. डॉ. श्रवण कुमार मीणा, संपादक रू कविता में आदिवासी समाज और संस्कृति, पृ.–16

Strategies Being Practiced for Promotion of Inclusion in Schools of Central District of Delhi- An Exploratory Study

- Dr. Sandip Kumar*
*Asstt. Professor (C&P)
- Dr. Shyam Sundar**
**Asstt. Professor (EPRA)

Abstract

Inclusion in education is crucial for children with special needs (CWSN) to receive equal opportunity. Strategies such as barrier-free access, peer support, and trained teachers are essential for promoting this. This study explores the strategies used by principals and teachers in schools in the central district of Delhi to promote inclusion. Data was collected through a questionnaire, and the findings will benefit all stakeholders in supporting inclusion in schools. The study also explored the available resources and infrastructure for CWSN, indicating that these resources make schools confident in promoting inclusion.

Keywords: Strategies, Inclusion, Children with Special Needs, Upper Primary Level.

Introduction:

To fulfil the aim of the Universalization of Elementary

Education, it is critical to provide children with special needs with long-term quality education.The Universalization of Elementary Education emphasises giving quality education to children with special needs, including access, enrollment, and retention. Inclusive schools should accommodate diverse learning styles and paces, ensuring quality education through appropriate curricula, organisational arrangements, teaching strategies, resource use, and community partnerships. This approach promotes social justice, equity, and equal treatment for all students, regardless of abilities.

Objectives:

1.To investigate teachers' teaching-learning practises for inclusion.

2. Research the principals' techniques for fostering an inclusive atmosphere.

3. Research the issues that teachers and principals confront regarding inclusion.

Population: This study has considered schools in the Central District of Delhi.

Sample: Only upper primary level teachers were selected from schools earmarked for the School Experience Programme(SEP) falling in the Central District of Delhi as the sample.

Tools: The investigators prepared two questionnaires and used them to collect data. Also checked the validity of the questionnaires, and only after that were these questionnaires administered in sampled schools.

The procedure of Data Collection: Investigators collected data through self-made questionnaires from 2 teachers per school and principals of the 13 schools of the Central district, which were selected for the School Experience Programme(SEP) for DIET trainees as a part of their course. It means 26 teachers and 13 principals gave their opinions on the strategies to promote Inclusion in their schools.

Analysis and Interpretation of Data: After collecting the required opinion from sampled schools, the whole data was tabulated into two groups, i.e., Group A and Group B. Group A consisted of the teacher's views on the effort made by them to promote Inclusion, while Group B consisting ofthe opinion of principals about the promotion of Inclusion in their schools.

Group A: -

Considering the objective of studying teachers' teaching-learning strategies for Inclusion, the data has been tabulated in three tables.

Table 1
Analysis and interpretation of Statements regarding teacher's knowledge & classroom activities.

S. No	Statement	Very High	High	Medium	Low	Very Low
1.	Teacher has broad knowledge about dealing with CWSN in regular classroom	8	16	2	-	-
2.	Teacher used bold colors for writing on the board	10	12	4	-	-
3.	Teacher used big font size for blackboard work	18	8	-	-	-
4.	Teacher encourage CWSN to participate in classroom discussion or group work	20	6	-	-	-
6.	Teacher modified instructions and strategies to accommodate CWSN in the classroom	16	6	4	-	-

Interpretation:

Teachers responded positively to CWSN in regular classrooms, using bold colours, encouraging discussions, and modifying instructions. A table showed high pedagogical knowledge, 62% favourable response, and 23% modification of strategies.

Table 2
Analysis of Statements regarding TLM/Resources availability and their usage in the classroom

S.No	Statement	Very High	High	Medium	Low	Very Low
5.	Teacher used the resources that were available in the school for assisting CWSN	16	8	2	-	-
11	Teaching learning material used by the teacher was in accordance to the diverse need of the students.	12	12	2	-	-
12	Teacher used multimedia for transaction the curriculum	8	14	4		
15	Teacher created the resources for explaining the concept	10	11	5	-	-

Interpretation : In the CWSN classroom, teachers utilize multimedia for curriculum transaction, utilizing CWSN-friendly content to meet diverse learners' needs, with 62% using multimedia and 30.76% highly using teaching-learning materials.

Table 3
Analysis of Statements regarding student involvement

S.No	Statement	Very High	High	Medium	Low	Very Low
18	Teacher ignoresCWSN's present in the classroom	-	-	-	1	25
19	Teacher encourage CWSN to express their views, ideas, and opinions freely	14	10	2	-	-
20	Teacher promoted active discussion among the students, including CWSN	12	14	-	-	-
21	Teacher illustrates real-life examples to make the concept clarity	10	12	4	-	-
23	Teacher used group as well as individual activities in the classroom	18	10	-	-	-

Interpretation : The table shows that CWSN students are actively involved in the classroom, with teachers responding highly to their involvement, promoting open communication and active discussion.

Section B

Keeping in mind the objective to study the teaching-learning strategies used by principles for promoting inclusion in their school, the whole data is tabulated in table No. 4 and 5.

Table 4
Analysis and interpretation of the statement on planning and execution

S.No	Statement	Very High	High	Medium	Low	Very Low
1.	Does your school communicate a vision that values the contributions of all learners as members of the school community?	11	2	-	-	-
3.	Does your school plan include inclusive practices?	2	9	2	-	-
5.	Do you motivate the teachers to createan inclusive environment?	5	8	-	-	-
7.	Isthe CWSN aware of the facility and resources available to them?	6	7	-	-	-
10.	Does your school have the provision of collaboration and consultation teaching for CWSN?	1	5	5	2	-
19.	Are families regarded as full members of the IEP team and do they participate in the planning process?	4	7	2	-	-

Interpretation :

The table emphasises the significance of inclusive practices in CWSN students, emphasising the need for collaboration and family involvement in the planning process.

Table - 5

Analysis and interpretation of the statement on Strategies used in school

S.No	Statement	Very High	High	Medium	Low	Very Low
14.	Can we identify and plan for resolving CWSN academic difficulties via data-based decision-making?	**8**	**5**	**-**	**-**	**-**
15.	Is data-based decision-making used to identify and plan for meeting CWSN behavioural challenges?	**8**	**5**	**-**	**-**	**-**
16.	Are families of CWSN fully involved in and regularly consulted about their student's educational programs?	**6**	**6**	**1**	**-**	**-**
17.	Are co-curricular activities available to and encouraged for CWSN students to participate in the same ways as their peers?	**7**	**6**		**-**	**-**

Interpretation: From the above table, we can conclude that data-based decision making used to identify and plan for meeting CWSN academic and behavioural challenges and families of CWSN consulted about their children's educational programs and encouraged the CWSN students to participate in the same co-curricular activities with their peers.

Discussion:

The Delhi govt is working to create an inclusive learning environment for CWSN students, utilizing resources like teacher training and counselling sessions. However, the government needs to address the issue of acceptance and provide specialist resources to manage limited resources effectively. The study emphasises the importance of focusing on girls with special needs and ensuring that all stakeholders pay particular attention to girls with special needs. The role of principals and teachers in addressing these challenges in Delhi schools is critical for creating a better and

more equitable learning environment.

Findings of the study: The significant findings of this study are as follows: -

1. Teachers and principals are crucial in promoting inclusion in schools. They utilise available resources like medical facilities and resource rooms effectively. Teachers encourage CWSN students to participate in co-curricular activities. However, some principals argue that schools lack proper collaboration and consultation facilities.

2. Teachers use data-based decision-making to identify and plan meetings with CWSN parents. Schools provide specialised training and therapy to help manage CWSN students.

3. The teachers use data-based decisions to identify and plan for meetings with parents of CWSN.

- Dr. Sandip Kumar*
*Asstt. Professor (C&P)

- Dr. Shyam Sundar**
**Asstt. Professor (EPRA)
DIET(Central) Daryaganj
New Delhi-110002(SCERT Delhi)
Mob. : 9013360202

References :

- Houston, W.R. (1987). Competency-Based Teacher Education. In M.J Dunkin (Ed) The International encyclopaedia of teaching and teacher education (PP 86-94) Sydney, Australia: Pergamon Press
- UNESCO. 1994. The Salamanca Statement on Principles, Policy and Practice in Special Needs Education.
- Handbook on Inclusive Education (for Elementary School Teachers). Distance Education Programme Sarva Shiksha Abhiyan (DEP-SSA), An IGNOU-MHRD Govt. of India Project, March 2006
- Towards Inclusive Education: Manual for General Teachers (2011): State Council of `Educational Research and Training, New Delhi.
- Sandip Kumar (2016). Inclusive Education for Children with Special Educational Needs, Academic Avenue Publisher, New Delhi.

D.H. Lawrence's The Rainbow: A Novel of Man-Woman Relationship with Modern Flavour

- Krishna Kumar Sharma
Research Scholar
- Dr. Kanwar Pal Singh,

Abstract : Man is a social being and he cannot survive in isolation. From the very beginning of this cosmos man and woman have been part and parcel of human relationship which is based on feelings and emotions. Emotions-based connections among the living being on this planet is the concrete foundation of existence. Human beings are connected to one - another emotionally or materialistically. Men-women relationship with its different shades is the footing of all human activities. D.H. Lawrence depicted this relationship aptly in his novel The Rainbow (1915). This novel is a saga that lasts upto three generations of the Brangwen family. Each generation in its own way retraces their moral and physical relationship depicted through specific ways of acting on each other and maturing of female and male characters fitted in specific social frames. In this paper, endeavours have been made to explore the actual connections between men-women in above mentioned literary piece. It also focuses on the societal aspects of that time in England through the status of various male-female characters and their relationship. Relations among the people are sometimes regarded as the touchstone of any society.

Keywords : Man-women relationship, emotionally, materiali-stically, generations, saga, etc.

Introduction : The Rainbow deals with the story of three generations of the Brangwen family. Tom and Lydia, Anna and William, and Ursula and Skrebensky are major characters in three generations of the family respectively. At the beginning of the novel author depicts a clear contrast between male and female family members of the family. Male members are dedicated to farm life and they are very much satisfied. They don't want to

mount on the social scale. On the other hand, women are interested in the social aspects of the community, they live in. Despite having an interest in farm life, they are cautious about progress on the social scale. They are aware of how people get domination. They believe that through knowledge one can rule in society.

Main Text : Lawrence describes the conjugal relationship between Tom and Lydia at the beginning of the novel. Tom is typical Lawrence's representative who is the fourth child of his parents. He is not much intellectual, rather dull-witted and his life is rooted in the soil at the Marsh Farm. He seeks ultimate fulfilment through a foreign lady Lydia Lensky. Lydia, the daughter of a Polish landowner, married Paul Lensky who is a doctor. She is completely dedicated to her husband and works in a hospital as a nurse. This couple spends some wonderful years of enjoyment and excitement but unfortune falls upon them as their two children die of some disease. Later Paul Lensky also died leaving Lydia alone in a foreign land i.e. England. After this grief, she struggles to return to life however it was near impossible. The only thing which wakes her up is her third baby Anna, who was an infant at the time of her husband's death.

The relationship of Tom and Anna gets attention throughout the novel. When Lydia becomes the mother of her first child from Tom, she feels a great experience. After this the bitterness of this relationship disappeared and Lydia feels connected with Tom completely. Tom believes his wife as unique and special. Their relationship is sensual and full of gentle feelings. This pair of characters in the novel is one of the happiest couples as the narrative witnesses, "They did not take much notice of each other consciously yet they were strangely aware of each other." (P-51) The writer of the novel attempts to point out that differences can be overcome only through the primal union and surrender that Tom and Lydia experience. The natural order of things is the only possible way to a better future.

Anna is building a totally different pre-marriage relationship with William. They got married in their twenties, a tender age of immaturity.

They have different attitudes and interests. Anna is very much passionate about physical love; she seeks enjoyment and regard in bearing a child. She constantly re-dedicates herself to a new pregnancy. The couple has differences on various topics of discussion. William has a certain spiritual passion for Christian myths and legends but Anna cannot believe in them. As time went on, Anna realised that they were opposites, not compliments. She also felt that he was something dark, alien to herself. William feels that she does not respect him. She only respects him as far as he relates to herself. The two quarrelled with each other and the conflict always ends with her victory; then they could love each other again, passionately and fully. One day Anna dances in the bedroom, all by herself, lifting her hands and her body to the unseen creator to who she really belonged. She put off her clothes and danced in the pride of her bigness. Rajinder Paul writes in his book The Rainbow: A Critical Study that Karl and Magalaner observe -

"It is this desire to re-establish affinity with the Unknown that explains Anna's naked dance while pregnant, a dance that celebrates her fertility and her relationship with the sun that brings life. Her dance is one of exultation, a ritualistic performance in which her dedication is to powers that ripen corn, bring rain, and provide warmth-that, in short, make growth possible." (2012-65)

Thus, it can be said that the relationship between Anna and William is up to the mark which has love, differences, and ultimately the desire to continue that emotional and physical connection with enthusiasm.

Throughout the novel, the author repeats the question of the morality of relationships and shame between two people. He states that there is no shame. He further raises the issue of the significance of an individual in society. As per Lawrence, an individual is just one brick in a building called the nation. Anton Skrebensky, in the novel states, “One must meet his/her place and play the given role. The man is as important as he represents the whole of humanity." (P-69)

The relationship of Ursula and

Anton Skrebensky is very complicated and gingery. Ursula who is emotional and intellectual develops into a thoughtful person as she grows in age. Being a child of William and Anna, she dreams of being a princess in her youth age. In the twenties, she engages in a relationship with Anton Skrebenksy, an Army official. After the courtship of a few months, Anton wants to marry Ursula but she denies it because she is perplexed about the future of both. The interconnection of Ursula and Anton is depicted as unsuccessful relation because of the unpreparedness of mined of Ursula and somewhat Anton's negligence of the relationship. Despite their mutual materialistic love, they find themselves in constant discard. At the end of the novel, Ursula is left alone. It could be said that Ursula is a representative of the modern woman.

The lesbian relationship between Ursula and Winfred hints the beginning of the feminist movement and women's rights. In the novel, Ursula makes a loving relationship with Winfred Inger but soon she realizes that such a relationship is not the happiest solution for her in the emotional and spiritual sense. Winfred represents the modern class women, intellectuals, who are eager to experiment with the emotional and spiritual sense. Marvin Mudrick in his essay The Originality of the Rainbow says, "The new women are too strong, and new men too weak, women have suddenly become aware of the power that a long period of time slept, and the men were suddenly faced with a rival." (1970). In the novel disturbed social relations are delineated through the image of miners who are faceless, nameless masses. Mine is a living entity which runs the life of a particular area. The man who is at home is nothing more than a machine that is not working. D.H. Lawrence emphasizes that, contrary to social perception, every human being is an individual for himself. The man is the master of his own destiny.

Ivo Vidan in his work The Variable Rainbow of Our Lives states, "Critics have long felt that it condemns, denounces environmental practices of an entire civilization, where man is drawn into the most intimate mechanisms, not only policy and governance and ideology, but those relations which are the weft of deriving personal views and general spiritual patterns." (542)

Conclusion : The changing social relations through three generations of the Brangwen family have been depicted magnificently in the novel The Rainbow. The characters, blurred at the beginning only divided into male and female, through the changes that surround them, experience spiritual, physical, and sociological changes. In the end, they are individuals and behave accordingly. The characters are tied to nature, functional, healthy human body, and stable order in which each male and female being takes place a natural birth right, depending on the gender in which they are born. The writer understands the needs of the young women intellectuals but still thinks that they would be happier when they perform their natural guaranteed function. Only this way they would have their lives filled with happiness. The female characters of Lawrence are free from the social taboos and take decisions of their own will.

- Krishna Kumar Sharma,
Research Scholar,
Chaudhary Charan Singh University,
Meerut, (U.P.) Mob. 9536896452
- Dr. Kanwar Pal Singh,
Head, Department of English,
Mihir Bhoj (P.G.) College, Dadri, (U.P.)

Works Cited and Consulted

Becket, Fiona, The Complete Critical Guide to D.H. Lawrence, Routledge, London, 2002. Blamires, Harry, A Short History of English Literature, Routledge, London, 1984. Bogles, Theo, Todd, Richard, Wonders with Words, Meulenhoff Educatief, Amsterdam, 1991.

Cushman, Keith, Ingesroll, Earl G., D. H. Lawrence: New Worlds, Fairleigh Dickinson University Press, Madison, 2003.

Dervin, Daniel, A Strange Sapience: The Creative Imagination of D. H. Lawrence,

University of Massachusetts Press, Amherst, 1984.

Kettle, Arnold, An Introduction to English Novel, Harper & Brothers, London, 1960.

Knopf, Alfred A., The Later D. H. Lawrence, New York, 1952.

Lachapelle, Dolores, D. H. Lawrence: Future Primitive, University of North Texas Press, Denton, 1996.

Mudrick, Marvin, The Originality of the Rainbow, Pretnice - Hall, Inc, Englewood Cliffs, New York, USA, pg. 48.

Vesna. Durovic1. The Relationship Between Male And Female Characters In The Novel

'The Rainbow' ISSN 0354-9852 Pregledni rad. P-69

Roadmap of Paris Agreement with Special Reference to India

"People of conscience need to break their ties with corporations financing the injustice of climate change"

- Kamni Sharma (Research Scholar)

Abstract : The present Article makes a humble attempt to study the concept of climate change, the roadmap of the Paris agreement and its effects especially in developing countries like India. At the present time, the world faces different kinds of problems but one of the burning issues right now is 'Climate Change'. The term climate change means that change in the atmosphere and weather conditions. Climate change has changed in the last few decades and affects the world. To resolve the issue of climate change the United Nation Environment Confe-rence on the Human Environ-ment, was established in 1972. After this, certain international conferences are established for curbing the problem of climate change such as- United Nation Conference on the Environment and Development (UNCED), United Nation Framework Convention on Climate Change (UNFCCC). After the failure of the Kyoto Protocol, the Paris Agreement i e. Conference of Parties (COP21) was established in 2015 at Paris by UNFCCC. The main aim of the Paris agreement is to strengthen the policies which tackle the problem of climate change. Recently, a new conference was held at Sharm el-Sheikh, Egypt to deal with the concept of climate change. It is 27th Conference of Parties i.e. COP 27 which is the main aim to mitigate the climate change and strengthen the developing nations through the finance which is provided by the developed nations to curb the issue and cut the emission of greenhouse gasses. The developing countries face the most challenging point because it is very difficult for these countries to contribute towards the Paris Agree-ment. It begins with an introduction of climate change, history of climate change, difference between climate change and global warming, aftermath of Paris Agreement and role of India.

Keywords : Climate Change, Greenhouse gasses, Paris Agreement, Conference of Parties, Developing countries.

1. Introduction : Climate change is the biggest issue all over the world which

poses danger to society. People are at risk from increasing flooding, intense heat, less access to food and water, increased disease, and economic loss due to climate change. One of the main causes of climate change is greenhouse gasses which heat the Earth temperature and are warmed by sunlight that is absorbed by greenhouse gasses. More of these gasses trap more heat in the lower atmosphere of the planet, contributing to global warming. Climate change is not a new phenomenon all over the world. The developing countries like India are affected more due to the problem of climate change. To mitigate the issue of climate change at international level various conventions are held and try to resolve the problem of climate change. The Paris Agreement was concluded in 2015 for curbing the problem of climate change but it is a challenge to the developing countries.

2. Meaning of Climate Change : Climate change is the term used to describe the global phenomena of climate transformation, which is defined by changes in the planet's typical climate (in terms of temperature, precipitation, and wind) that are mostly brought on by human activity. Climate change reflects the variations within the earth's atmosphere, processes in other parts of the earth such as oceans and ice caps, and the effects of human activity.[3] The term climate change refers to change in the normal weather patterns caused due to pollution. In simple words, it is the expected weather conditions, when the expected weather changes it is called climate change. It also remains to be the most dreadful challenge facing humanity for an adverse change in the climate system of the biosphere beyond a certain point would not only pose a threat to the sustainability of our production system but also to the existence of life on earth. Due to climate change, precipitation is expected to rise in certain parts of the country while falling in others areas. Climate change is a global environmental problem which has been receiving political focus both at international and national levels.

• According to the University of California : "Climate change refers to significant changes in global temperature, precipitation, wind patterns and other measures of climate that occur over several decades or longer".4

• According to UC Davis : "Climate change refers to significant changes in

global temperature, precipitation, wind patterns and other measures of climate that occur over several decades or longer".[5]

3. Climate Change and Global Warming : The term "Global Warming" describes the rise in global temperatures primarily brought on by an increase in the atmospheric levels of greenhouse gasses. Global warming refers only to the Earth's rising surface temperature, while climate change includes warming and the "side effects" of warming-like melting glaciers, heavier rainstorms, or more frequent drought. On the other hand, climate change means that climate change is the term used to describe long-term, progressive changes in variables such as precipitation, temperature, and weather conditions.

4. Paris Agreement : The temperature of the earth is rapidly heating, and the ocean and air temperature is rising day by day. To mitigate the problem of climate change various conferences are introduced by UNFCCC. An international agreement on climate change that is legally binding to all countries in the world is that Paris Agreement. At the UN Climate Change Conference (COP21) in Paris, France, on December 12, 2015, it was approved by 196 Parties. It became effective on November 4, 2016. Under the Paris agreement, the member countries are adopting the concept of 'Nationally Determined Contribution (NDC's)' in which they contribute towards developing nations for mitigating climate change. The Paris Agreement offers a framework for those nations who require it to receive financial, technical, and capacity-building support. The Paris Agree-ment's main goal is to limit the rise in global temperature to 1.5 degrees Celsius above pre-industrial levels. Recently, COP27 was convened in Egypt to achieve this goal. In this conference, a "Loss and Damage" fund will be established as part of the COP27 accord, and it will give money to vulnerable nations who are most impacted by the climate catastrophe.

5. Role of India in Paris Agreement : As per report, India is the third largest emitter in the world which raises the problem of climate change. In accordance with the Paris Agreement 2015, India agreed to lower its gross domestic product's greenhouse gas emissions intensity by 33% to 35% by 2030, raise its non-fossil fuel power capacity to 40% from 28% in 2015, and significantly enhance forest cover to

absorb carbon dioxide. Under Conference of Parties 27 (COP27), the world's third-biggest emitter has committed to reduce the “emissions intensity" of its gross domestic product (GDP) to 45% below 2005 levels by 2030. India's pledge is an update to its first nationally determined contribution (NDC) submitted in 2015, which targeted a 33-35% cut.[7] In line with the UNFCCC's principles of equity, CBDR, and respective capacities, India's INDC seeks to create a global architecture that is efficient, cooperative, and fair. Under COP 27, India also contains a pledge that by 2030, non-fossil fuel sources will account for around half of its installed energy producing capacity. As a means of achieving the goals of the Paris Agreement, India launched a new idea known as the "LIFE"- "Lifestyle for Environment" popular movement. The goal of the National Innovation Plan on Climate Resilient Agriculture is to create climate resilient technology that might be used to increase crop yield in the agricultural industry. In a recent National Address at COP 27, Union Minister Shri Bhupender Yadav stated that India is very concerned about the issue of climate change. As a result, India chose the G20 motto of "One earth, One family, One future" in order to confront the issue of climate change together.

6. Conclusion : At the end, climate change is a biggest issue in all over the world, especially in developing countries. To mitigate the problem of climate change, Paris Agreement is introduced by UNFCCC which is a strong commitment international agreement which address the issue of climate change. The Paris Agreement is act as a guide for future action on climate change and India plays its active role to achieve the target of Paris Agreement.

Mob. 9464171107

References :

1. Retrieved from <https://www.weforum.org/agenda/2015/11/15-quotes-on-climate- change-by-world-leaders/> visited on 23 February 2022 at 7 pm.
2. Assistant Professor in Punjab College of Law, Usma, Tarn Taran.
3. M.Z.A Khan & Sonal Gangawala, Global Climate Change: Causes and Consequences (Jaipur: Rawat Publications, 2011), P.34.
4. Retrieved from https://climatechange.ucdavis.edu/climate/definitions visited on 24 February 2023 at 10.40 am.
5. Retrieved from https://climatechange.ucdavis.edu/climate/definitions#:~:text_visited on 24 February 2023 at 10.50 am.
6. Retrieved from https://www.climate.gov/news-features/climate visited on 1st March 2023 at 8.40 am.
7. Retrieved from https://www.carbonbrief.org/qa-what-does-indias-updated-visited on 24 February 2023 at 11.00 am.

अमावस का स्याह रंग है
हर तरफ चल रही जंग है
घर के दीपक से लग रही
घर में आग, ताजा प्रसंग है
महल करते झोपड़ियों का
आज भी नित शीलभंग है
साहूकार के गिरवे पाग
बच्चें-बीवी नंग-अनंग है
आजादी के दशकों बाद
डसता शोषण का भुजंग है
जिनको बिठाया तख्त पर
अखबार में देखो व्यंग है
उड़ गई हैं नींद रातों की
दिन का चैन कटी पतंग हैं

अन्धकार दूर हो हृदय का
नवीन प्रकाश हो
नवीन राह, प्रेरणा नई
नवीन प्रयास हो
ममता बढ़े, पवित्र बने
करें सभी शुभ कर्म
लक्ष्य एक ही हो जीवन का
खुला आकाश हो

- पुरुषोत्तम सत्यप्रेती

भगवान बिरसा मुंडा जयंती 15 नवम्बर

जनजातीय गौरव दिवस

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक पिंकी सत्यप्रेमी ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार